माँ

(काव्य संग्रह)

स्तुति सक्सेना सिंह

उत्कर्ष प्रकाशन

ISBN: 978-93-89298-66-6

©सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक : **उत्कर्ष प्रकाशन**
मुख्य कार्यालयः
142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा,
मेरठ कैन्ट-250001 (उ0प्र0)
फोनः 8791681996
प्रशासनिक कार्यालयः
लोहिया गली-4, बाबरपुर, शाहदरा,
दिल्ली-110 094 फोनः 8218114205

ई-मेल : uttkarshprakashan@gmail.com
वेबसाइट : utkarshprakashan.in

प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : ₹ 100
रचनाकार : **स्तुति सक्सेना सिंह**

समर्पण

नास्ति मातृसमा छाया

नास्ति मातृसमा गतिः ।

नास्ति मातृसम त्राण

नास्ति मातृसमा प्रपा ।।

माँ के समान कोई छाया नहीं

कोई आश्रय नहीं, कोई सुरक्षा नहीं

माँ के समान इस संसार में कोई

जीवनदाता नहीं।

"There is no shade like mother,

No resort like a mother,

no security like a mother,

no other ever-giving fountain of life."

–स्कन्द पुराण 6.103.104

Prologue

Most challenging part is penning down bereaved feelings, it's like re-experiencing the most miserable phase of life Through the array of presented poetic drafts. I have attempted to congregate all events happened veritably adding some inferential once too.

More precisely I would say,neither I am a writer nor a poet, but definitely an unfortunate daughter ...Daughter who not only lost her mother but did lost her biggest strength.

her mirthful vivacious companion.

her motivational therapist for every hard times...

She was the one, I always reckoned upon

She was Prefect Paradigm of Proverb

"A friend in need, is the friend in deed"

This book is a dedicated token of regard and love for the irretrievable loss of my life.

Capping up my bottle with a note Always value ur precious gems in life.

As they reside by you unambiguously.

Once they are mislaid,

Those vacant spaces can never be replenished

Miss u Maa

Stuti Saxena Singh.

Mail id-- stutisaxena8544@gmail.com

अनुक्रम

बस एक तस्वीर बची है ०7

मकान कभी घर हुआ करता था ०8

दिल की गहराईयों में एक चीख़ दफन है 17

करवा चौथ 19

अन्तिम यात्रा 24

मनहूस पल 33

फरवरी 39

दीपावली त्यौहारों की लड़ी 46

***

बस एक तस्वीर बची है....

एक मर्म आवाज
जो कह जाती थी, कई बातें
साथ ! अब बस ! तस्वीर बची है।

कानों में घुलता वो शहद
और वैरागों को मिला हो, जैसे पूरा शहर
अब बस ! तस्वीर बची है।

अब शायद उस घर में कोई स्वर नहीं गूंजेगा,
शायद कोई खाने को दस चीजें नहीं पूछेगा
ना ही आ पाएगा वो अपनापन
जैसे हो यह मेरा ही आँगन
ना होगा झिर झिर बहता माँ का प्यार
ना ही मिलेगा फिर कभी वो दुलार
क्योंकि अब बस ! तस्वीर बची है।

– *आयुषी सक्सेना*

मकान कभी घर हुआ करता था

मकान कभी घर हुआ करता था,

आलिंगन खुशियों का,

त्यौहारों की रौनक,

हँसी, खुशी,

चाय की

चुस्कियाँ

बातें

बेहिसाब !

बेजान, पर

रंग बिरंगा

ईटों का

मकान

कभी घर हुआ

करता था....

याद आता है

गुजरा

बचपन !

उस छोटे से

आँगन में

बड़ों का

बैठना !

‘चैस बोर्ड’

वाले फर्श पर

खेलना,

दरवाजे से

पीछे वाली

दुकान जाना,

इमली के गुल्ले,

व हाथ बम्ब

लाना.........

होली में छत

पर जाके, आपस

में ही रंग

लगाना.....

कभी यह

खुशियों का

समुन्दर

हुआ करता था

कभी यह मकान

घर हुआ करता था !

फर्श बदला,

दरवाजा बदला....

खुशियाँ

त्यौहारों सी हुई

न बदला तो,

मेरी माँ का

गेट पर खड़ा

होना,

मेरे स्कूल

जाने पर गेट

से बाय कहना

नहीं बदला वोह,

'पापा' का गेट

पर इन्तजार करना....

आने पर जल्दी

से चाय

बनाना....

मकान जो

घर हुआ करता था !

खुशियों

का गढ़ हुआ

करता था ।

कब बचपन

गुजर गया,

रेत जैसा !

फिसल गया

पाया,

हमने भी एक

हमसफर,

निभाई एक रीत

जिसने घर से

दूर किया....

दुःख नहीं था

कि घर से दूर हूँ...

अब,

घर जाने का

दिल में

सुरूर था,

माँ को अब हम

दोनों के आने का
इन्तजार हुआ करता था ।
कभी ये मकान
घर हुआ करता था ।
कुछ दूर और
चले, समय
यूँ ही कटता
गया....
लोगों के गिले
शिकवों से दिल
भी कभी
भरता गया
पर जब ख़बर
आयी एक नन्हें
मेहमान की,
खुशियों से
मेरा दामन भर गया,

माँ ने जो दुआ

माँगी वह,

कुबूल हो गयी,

घर मेरा

खुशियों से

भरपूर हो गया

माँ का

माधव इस

संसार में

अवतीर्ण हो गया

रंग-बिरंगी ईंटों

का मकान

खुशियों से

महक गया।

खुशियाँ मेरी

क्षणिक थी क्या ?

आज रुसवा

मुझसे

खुदा हो गया

एक माँ से उसकी

माँ छीनकर

ऐ ईश्वर तू

कैसे बड़ा हो

गया ?

आता है क्रोध

तेरे इस अन्याय पर

एक बेटी को बेटे

का सुख देकर

माँ का साया,

छीन लिया....

उसे दुःख देकर

ऐ ईश्वर तू

कैसे बड़ा हो गया....

घर का वह 'गेट'

अब सूना हो

गया...

गेट पर इन्तजार

करने वाला

सदा के लिए

सो गया....

कोई न करेगा

उस गेट पर अब

मेरा इन्तजार

वह खुशियों

का घर अब

रंग बिरंगी

दीवारों का

मकान हो

गया....

दिल की गहराईयों में एक चीख़ दफन है

न हसरतें, बेवजह एक

सोच कायम है,

लौट आओ किसी दिन एक

आस नज़्म है

पर सच है यह....

रंगों से खूबसूरत लाल

तेरा कफ़न है....

कल तक जो मुस्कराते थे

तुम्हारा हाल-चाल पूछकर

आज आँसुओं से अपना हाल

बयाँ करते हैं...

फिर लौट आओ तुम एक बार,

ये ही दुआ करते हैं ।

अक्सर इस दिल ने

धोखा खाया है,

टूटा, अल्फ़ाज़ों से

दुःखाया भी गया है...

तुम्हें खो कर यह

समझ आया है

क्यों हीरा रत्नों का

सरताज कहलाया है !

जैसे नहीं जीवन

मछली का पानी बिन,

हमारा हाल भी कुछ

ऐसा है 'तुम बिन'

क्यों किसी के जाने पर ही

उसका मोल होता है

माँ-बाप-बेटी का रिश्ता तो,

सदा ही अनमोल होता है

आज भी जब गलियारों से

गुजरती हूँ

लोग अक्सर पूछा करते हैं,

माँ की तबियत कैसी है? अब

मुख से यही बोल निकलता है

माँ ठीक है अब, ठीक है अब ।

करवा चौथ

फिर से सुहागनों का
त्यौहार आया
संग खिलखिलाते रंग और
खुशियों का साया
कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि
की यह माया
रंग बिरंगी चूड़ियाँ और
मेहंदी की बहार लाया
सोलह श्रृंगार कर, भूख
प्यास त्याग, करवा अक्षत
से अलंकृत
चन्द्रमा उपलक्ष्य
घी का दीपक आलोकित

दीर्घ आयु की कामना कर,

मांग में सिन्दूर सजाया

लाल जोड़ा, लाल फूल का

महकता गजरा केशों पर लगाया

आज सुहागनों का त्यौहार आया

करवा चौथ, सुहागनों का

पर्व आया

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा

तिथि..........

कौन सा त्यौहार था, जो

चौखट पर हमारी भी,

श्रृंगार असबाब हाजिर हुआ,

वो लाल चूड़ियों की खनक,

पायजेब की झंकार

कुमकुम, काजल, मेहन्दी

आलता से यह खूबसूरत

श्रृंगार

लाल सुहाग की साड़ी, व
लाल चुनरियाँ भी उड़ायी गयी...
अश्कों से उसके हाथों में
मेहन्दी भी रचाई गयी,
नाक की शोभा उसके
मुख में डाली गयी
यह कैसा त्यौहार था
जब फूलों से
उसकी सेज सजायी गयी।
प्रिय को दीर्घ आयु का
वरदान दिये
चार कन्धों पर
विदा लिये
यह कैसा त्यौहार आया था ?
करवा चौथ पर सजे
जैसे दुल्हन,
मखानों, फूलों, अक्षतों की

बौछारों के बीच

'राम नाम सत्य' के

बोल वचनों से उठाया था

ये कैसा त्यौहार आया था ?

दूर जा रही थी

अपना करवा, घर छोड़कर...

पूजा पाठ,

घी का दीपक अकेला कर

वह सदा के लिये

प्रिय का माथा सूना कर

सफेद लिबास में

लिपटा गयी

श्रृंगार अपना पूरा कर

करवाचौथ मना गयी

सुहागन का आज सबसे

बड़ा त्यौहार था

घर-आंगन में

दूर–दराज,

मेहमानों का भी

अलंकार था...

ये मेरे आंगन में आज

दीर्घ दुःख का कैसा

त्यौहार......था ?

अन्तिम यात्रा

हंसी मजाक में कहते

ये कभी....

तो चलो आज यह दिन भी

आया...

ईश्वर का पैगाम लिये यमराज

का साया....

ज़िन्दगी नुमा पन्नों पर

सांसों की स्याही कम थी

दिल तो था मगर धड़कनें

कम थीं....

धमनियों में स्वस्थ रक्तचाप
की कमी...
धुंधली आँखों से प्रिय को
देखने की चेष्टा
जैसे डूब रही हो उनके
मन की आस्था
कुछ और धुन्ध जब छाया
अपनी माँ, दीदी
और भाई को समीप पाया...
जिनका हाथ छोड़ 35 साल
पूर्व मैं विदा हुई...
आज उनको आलिंगन करता
देख मन घबराया....
शायद ईश्वर का पैगाम
लिये कोई आया ।
घर के 'गेट' से मुझे
अन्दर तो लाया गया,

पर ये क्या ईश्वर...

धरती की गोद में

बिस्तर बिछाया गया...

धूपबत्ती से क्यों मेरा,

आंगन महकाया गया

पहले तो पानी भी

नापतोल कर मिलता था

ये क्या....आज गंगाजल

पिलाया गया....

न शीत का अहसास

न ग्रीष्म की तपन

न दर्द की परवाह, जैसे

स्थिर था मेरा हर अंग ।

असमंजस में, दुविधा में,

मैं पूछती अपने प्रिय से

अचम्भित हृदय हुआ जब

उनको व्यस्त पाया,

व्यस्तता अन्तिम कार्यों को
सटीकता से सम्पन्न करने की
पैगाम को पूर्ण करने की
कायस्थ कुल की महिला
की अन्तिम विदाई की...
यह कैसा पैगाम आया था !
अपने प्रिय को
दीर्घ दुःख के असमंजस
में पाया था
ईश्वर का पैगाम लिये
कोई आया था
आज ये कैसा दिन आया,
गैरों को भी समीप पाया,
कुछ लोगों की हिचकिचाहट
भी महसूस की
और कहीं बेहिसाब प्यार
हिस्से में आया...

कहीं आँखों में बिखरे

आँसुओं की बाढ़

तो कहीं सूखा तालाब भी

नजर आया...

जब गेरों को समीप पाया...

आज ये कैसा दिन आया !

ईश्वर का पैगाम लिए

शायद कोई आया !

मेरे सीने से लिपटा मेरा

अंश

बहुत लम्बे इन्तजार के बाद

आया

'अस्पताल' में नहीं, उसको

घर में ही पाया था...

क्यों नहीं थीं तुम, जब चाहा

तुम्हें जी भर देख पाऊँ...

कहकर तुम से दिल की अनसुनी

बातें, वो माँ-बेटी के प्यार

के लम्हे जी पाऊँ

अब मेरे शरीर को

देख क्या करोगी !

क्रोध से मुख तमतमाया

ईश्व का पैगाम लिए

कोई आया।

फिर क्षण भर बाद ही अंशज

पर बहुत प्रेम आया

बेटी रखना अपने इस

परिवार का हमेशा ख्याल

ये ही अपने स्थिर पड़े

शरीर के दिल में आया...

मेरी लाढ़ो, बेटू और मेरे

प्यारे से 'माधव' की माँ

पर, उस दिन न जाने क्यों !

लाढ़ का सैलाब आया!

शायद पैगाम लिए कोई

आया..........

जिनके हाथों में अपनी

अंशज को विदा किया था...

आज वो भी हमारा

हाथ पकड़े शान्त बैठे थे

शायद कहना था बहुत

कुछ, पर मौन कर स्थिर थे...

जिसे माना था अपना बेटा

आज उनसे कुछ पूछ बैठे थे...

क्या...बेटा निभा पाओगे

जिम्मेदारी इस बिखरे

परिवार की...

दिल ही दिल बिलखते मेरे प्रिय

और प्यारी की...!

जवाब भी कुछ पल में,

पाया.....

जब-कान्धा देने

वह मेरा बेटा आगे

आया

चलो अब भरे दिल से

घर से विदा होकर

अपनों को छोड़कर

जाने का वक्त आया

ये घर ! ये गली ! ये शहर !

ये दुनियाँ

क्षणों में पराई हो गयी

घर की नींव रखने वाली

प्यारी बेटी के हाथों मां

की विदाई हो गयी !

ज़िन्दगी नुमा पन्नों में

हमारी याद बनाये रखना

खुशियों के पलों से कभी

ना मुकरना ।

देह त्यागी है, दिल यहीं है
ज़िन्दगी का ‘स्टेटस’ चेन्ज
हुआ है, पर नाम वही है...!
चले, अब हम पैगाम लिये
किसी दूसरे ही सफर पर...
खुश रहो सभी, ऐसे दिल
ने जाते-जाते दुआ की है।

मनहूस पल

खुशियों के समुन्दर में,

यह कैसी सुनामी आयी !

मां का अस्तित्व मिटाने,

जब वह रात आयी...

काल की छाया से धुंधलाती

वह निर्मल काया...

धीरे-धीरे थमती

वह सांसें...

घटता वह रक्तचाप

उथल-पुथल करती,

वह 'नाड़ी' की आवाज,

वह गूंजता मशीनों का शोर,

जैसे बेबसी और

लाचारिता का दौर !

सबको दीर्घ आयु का

वरदान जो देती थी ।

आज क्यों वह मशीनों के

सहारे लेटी थी

हर तरफ यह कैसी

मायूसी छायी थी

उम्मीद की किरण भी

डगमगायी थी

वोह जांबाज मेरी माँ,

आज हताश नजर आयी थी

मजबूत हृदय से अलंकृत

यह प्यारी सीरत आज

मजबूर नजर आयी

मां का अस्तित्व मिटाने

जब वह रात आयी

लोगों को कहते सुना, लगता
है मौत का पैगाम आया है !
पर यह तो फरिश्तों के,
प्रमाद में लिपटी एक काया है,
'निष्ठावान परिचारिकाओं'
के परिशीलन की माया है !
रिश्तों का गजब
मजाक बनाया था,
'पेशेन्ट' आई.डी.
'सब्जेक्ट' पेशेन्ट बैड नम्बर
से बोध कराया था !
तीव्रता से सुधार होने का,
आश्वासन भी तो,
यहीं डगमगाया था !
क्यों इन सेहत के फरिश्तों ने
ऐसा जाल बिछाया था,
लापरवाहियों के तहत यह

मनहूस पल बुलाया था !

बीस अप्रैल से शुरू इस

ज़िन्दगी मौत की लड़ाई में

मौत बेदर्द सी सरताज आई थी ।

'आल्टरनेट डाइलेसिस' ऑक्सीजन

कन्सनट्रेटर के .....चलते

'हॉल्टर' टी.पी.आई. 'वान्कोस्कोपी'

का तांता....लगाये थी।

न जाने क्यों उस मजबूत

देह को,

मशीनों के सौजन्य

किया !

मजबूत हृदय का सामना

'कार्डिएक अरेस्ट' से हुआ !

वेन्टीलेटर पर भी उसे ले

जाया गया !

फिर हर दिन तबियत और

गम्भीर का बहाना

बनाया गया

हद तो तब हुयी,

जब फरिश्तों की लापरवाही

से उसे 'कोमा' में

पहुँचाया गया !

हर पल उसके ठीक होने का

झूठा आश्वासन......

दिलाया गया,

यह मनहूस पल भी

बुलाया गया !

5 मई की सुबह ही तो,

समझ आया !

जब मई की ग्रीष्म में

उसका शरीर ठण्डा पाया !

सॉरी कह हमें 'बाडी' को

लौटाया गया...

‘एलीवेटेड वैक्टीरियल इन्फेक्शन

इन ब्लड’ वजह

बतलाया गया...

सब ठीक होने का

आश्वासन ऐसे

समझाया गया

सफेद चादर में लिपटी

देह को

‘एम्बूलेन्स’ से घर

पहुंचाया गया

माँ के अस्तित्व को मिटाने,

चार मई की काली रात आई,

खुशियों के समन्दर में,

यह कैसी सुनामी आई !

फरवरी

फरवरी कभी ख़ास

हुआ करती थी

त्यौहार जैसा मेरी माँ

घर रोशन किया करती थी

चॉकलेट, टॉफी और गिफ्ट

की भरमार लगाया करती थी

बार-बार दिन यह आये,

गाने का आलाप किया करती थी !

मेरे बचपन में

बचपने की हरकतें वही

किया करती थी !

मेरी पसन्द की ड्रेस

'इन एडवांस' कहकर

दिलाया करती थी,

माँ के सानिध्य और

दुआओं का हर दिन

अहसास यह

फरवरी किया करती थी

फरवरी कभी ख़ास

हुआ करती थी ।

रूठ भी मैं अगर जाती

तो माँ मुझे मनाती

मेरी पसन्द का केक ले

'हैपी बर्थ डे टू यू'

का गीत गाती

मामा से कह HBT स्तुति

बड़े 'फान्ट साइज' में

प्रिन्ट करवाती

खुद मेरे 'बर्थ डे' की तैयारी कर

घर को मेरे स्कूल

जाने के बाद सजाती

पहली तारीख से शुरू यह

खुशियों का त्यौहार

ग्यारह तक चलता,

रिश्तेदारों दोस्तों का गेट

टू गेदर होता

देर रात तक

हँसी मजाक चलता,

दिल मेरा असीम खुशियों

का अहसास करता !

फाल्गुन मास ख़ास

हुआ करता था

माँ की प्रिन्सेस जैसा

अहसास हुआ करता था

फरवरी कभी ख़ास
हुआ करता था ।
कभी जब मैं
दूर हुआ करती...
कोरियर भेज माँ
मुझे बर्थ डे विश करती
उसके हाथ के गोंद वाले
लड्डू , सुगन्ध की पिस्ता
बर्फी, पन्जीरी, कसार मेरा,
गिफ्ट हुआ करते थे
खास मेरा दिन हो,
पूरे दिन दुआओं के
सन्देश भेजा करती थी...
फरवरी कभी ख़ास हुआ
करती थी ।
त्यौहारों जैसा मेरी माँ
घर रोशन किया करती थी ।

हॉस्टल में ‘सरप्राइज विजिट’

कर मेरे चेहरे की

मुस्कान बन जाती...

दोस्तों से मेरे मिलकर

माँ जैसा प्यार उन

पर भी लुटाती...

घर से बनाकर अपने

हाथों की चाय

मुझे पिलाया करती...

साथ नमकीन पारे

मठरी भी लाया करती...

प्यार की वह मूरत

स्नेह का भण्डार उड़ेला करती...

फरवरी कभी ख़ास

हुआ करती थी

हर दम माँ के आने की

आस हुआ करती थी ।

अब न मैं, न यह फेब

खास है,

तेरे जाने से सारी खुशियाँ

राख हैं

तूने तो मुझे बहुत बार

मनाया है।

मैं कौन सा कोरियर भेज

तुझे अपने पास बुलाऊँ ?

तरस गये मेरे कान, तेरी

स्नेह भरी आवाज सुनने को,

बोल उन्हें क्या समझाऊँ !

तेरे जाने से मेरी ज़िन्दगी

एक गीले कपड़े की तरह

सिमट गयी है,

माँ, पत्नी, बहू और बेटी में

बँट गयी है,

तेरी ख़ास ‘चीज’ आज

साधारण हो गयी ।

फरवरी ख़ास से

आम हो गयी ।

दीपावली त्योहारों की लड़ी

पंच दिवसीय त्यौहारों की लड़ी
धनतेरस से दूज तक चली,
पंचमेवा, फल, सुगन्धित फूल
व मिठाई से इस पर्व की शोभा बढ़ी ।
कृष्ण पक्ष की त्रियोदशी पर
कुबेर और धनवन्तरी की पूजन विधि,
स्वर्ण आभूषण, चाँदी के सिक्के व
बर्तनों की खरीदारी,
हँसी खुशी, संग उमंग,
प्रत्येक पग पर भागेदारी.....
पंच दिवसीय त्यौहार की लड़ी,

धनतेरस से प्रारम्भ हुई

दूज तक चली.....

नरक चौदस पर, बेहिसाब घर की सफाई

जैसे माँ लक्ष्मी को अधिक से अधिक

प्रसन्न करने की लड़ाई

देखो नरक चौदसी आई ।

वह देर रात तक, दीप प्रज्ज्वलित कर

घर की चौखट पर आराधन !

माँ लक्ष्मी का खील बताशे, मीठे

खिलौनों से घर में आलिंगन !

दीप दान की विधि कर, यमराज से

अकाल मृत्यु से रक्षा का निवेदन !

छोटी दीपावली, ऐसे इस

पंच दिवसीय त्यौहार का

हिस्सा बनी

पंच दिवसीय त्यौहार की लड़ी

धनतेरस से दूज तक चली।

कार्तिक अमावस्या, जैसे हो पूर्णिमा
यह रात जगमगाई !
रंग-बिरंगी अल्पना से
हर चौखट सजाई ।
दीपों से अलंकृत उज्ज्वल घर
आंगन या दीप्तिमान !
विघ्नहर्ता, विष्णुप्रिया संग
बिजितेन्द्रिय [1] थे विराजमान !
आराधना, अर्चना, 'स्तुति' कर
दीपोत्सव का अनुष्ठान !
अखण्ड दीया भी यहां
समक्ष विद्यमान !
सुख, समृद्धि, सम्पन्नता, स्वस्थता
का मांगे वरदान !

1— *बिजितेन्द्रिय... वायुनन्द*

पटाखों की लड़ी, देर रात तक जली
दीपोत्सव की धूम धनतेरस से दूज तक चली ।
रिक्त वार, पड़वा, प्रतिपदा से विदित
गोवर्धन व अन्नकूट से विभूषित
विक्रम सम्वत् का प्रथम दिन अलंकृत
त्यौहार की श्रृंखला में, यह पर्व आया
गोवर्धन कनिष्ठा पर श्रीकृष्ण ने उठाया ।
आंगन में खील खिलौने
पानी के कलशों के मध्य
गोवर्धन लिये कृष्ण का चित्र बनाया
कलाकन्द से बनी वो,
दुर्जन की जीभ को भी जलाया,
बुराई पर अच्छाई का सन्देश लिए
गोवर्धन पर्व आया।
कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि,
चित्रगुप्त के पूजन पश्चात भाई दूज की विधि,
कोरे लेख्य पर लिपिक पीढ़ियों का संचयन

रोली, मोली, धूप, दीप, अक्षत से चित्रगुप्त का

अभिनन्दन,

स्वास्तिक से मण्डित, पूरित आलेख सविधि

संकलन ।

भाई के ललाट को रोली, अक्षत से

सुशोभित कर,

शुभ, श्री, सफल, समृद्ध आयुकाल

का उपहार....

भाई दूज का ऐसा

गुरुत्वाकार !

भाई से सुरक्षा का वादा लिए, वहन ने ली विदाई

इस प्रकार विधि-विधान से पूरित भाई-दूज मनाई !

त्यौहार की लड़ी, धनतेरस से दूज तक चली...

[1] 2076 विक्रम सम्वत् परिधावी सम्वत्सर
कार्तिक मास कृष्ण पक्ष, त्रियोदशी का त्यौहार
सोने के आभूषण, चांदी के सिक्कों की
नीरस थी लहक इस बार
दीपोत्सव की जगमगाहट से चमकता
पराया सा लगा यह बाजार ।
माँ के जाने का अवसाद
हृत्पिंड में अविरल, अक्षीण रहा था
प्रतिमा लक्ष्मी गणेश
संग हनुमान की
अचरज लिए एक उत्कीर्ण
वस्तु दूसरी अचल मूरत को दिखा !
दिल दुखा !
त्यौहारों की लड़ी, कृष्ण पक्ष की त्रियोदशी से
शुक्ल पक्ष द्वितीया तक चली ।

1– *दो हजार छियत्तर वि० स०*

नरक चतुर्दशी पर, इस बार भी
सफाई अभियान चला।
चौदस के दिन सफाई का
महत्व समझाने वाली का
ना होना बहुत खला ।
घर को शोभायमान
करती उसकी बातों का
समन्दर आज सूखा पड़ा...
चौखट पर दीप प्रज्ज्वलित कर
खील बताशे बिखेर कर भी
आँगन अश्रुओं से भरा...
अंजना, माँ का ना साथ
होना हर एक क्षण खला
दीपोत्सव का त्यौहार त्रियोदशी,
चतुर्दशी पूर्ण कर आगे चला ।
कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या !
माँ के हाथों का रमणीय सुस्वाद व्जंजनों

से सुवासित रसोई घर, बहुत याद आया...
इस बार माँ नहीं, प्रमोद अंकल के
हाथों का बना, खाना खाया...
माँ के अपूर्व वात्सल्य, सुभाग्यता का
अहसास हर पल स्मरण आया...
दीपोत्सव के पूजन हेतु
देवालय पूर्व जैसा ही सजाया...
पूजन कर ईश्वर को भी वैसे ही मनाया...
पर अश्रुओं के सैलाब को
यह हृदय गतिरुद्ध न कर पाया...
पंच दिवसीय त्यौहार ने इस बार
अपने से विच्छिन्न होने का बोध कराया ।
लाल साड़ी पहन, मेरी माँ,
गोवर्धन अपने हाथों से बनाती !
फिर कहानी कह, कलाकन्द से
बनी दुर्जन की जीभ भी जलाती !
कलश में खील, मिठाई और पानी

रख, सीकों से सुसज्जित गोवर्धन
पूजा का महत्व भी समझाती !
कथा कह फिर व्रत का
पारण करती...
आज लाल चुनरी उसकी
तस्वीर पर उड़ाई थी...
स्वर्ण पटका धारण कर इस बार
कथा पापा ने सुनाई थी।
पंच दिवसीय त्यौहार की
शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि,
एक बार फिर आयी थी...
गोवर्धन लिए कृष्ण की पूजन विधि
ऐसे पूर्ण करायी थी ।
2018 [1] में भाई दूज मनाने
माँ बरेली गयी थी...

1- सन् 2018 (दो हजार अट्ठारह)

भईया-भाभी के साथ समय बिताकर
बहुत खुश भी हुई थी...
2019 में अपने ही भाई की मौत से
कुछ टूट सी गयी थी...
शायद इसलिए इस बार दूज पर
वह यहाँ नहीं थी...
चित्रगुप्त का पूजन कर पीढ़ियों
का 'सिजरा' [2] भी अंकित हुआ !
व्याप्त हुआ हृदय शोक से जब माँ
का नाम 'स्वर्गवासी' से अलंकृत हुआ !
पंच दिवसीय त्यौहार कृष्ण पक्ष
की त्रियोदशी से शुरू शुक्ल
पक्ष की दूज तक हाजिर हुआ !

(मिस यू माँ)

2- लेखा-जोखा पीढ़ियों का